21-9-2001

अपना मनोबल बढ़ाओ और मनसा सेवा करो

वर्तमान समय प्रमाण हमें अपनी शान में स्थित होकर परेशान आत्माओं को कुछ-न-कुछ अंचली देनी है। तो बाबा का यही इशारा है कि आप सब अपने को जिम्मेवार समझो और तीन बिन्दु ही याद रखो -द. हम आत्मा बिन्दु ७. बाबा बिन्दु और कामकाज करते, सम्पर्क-सम्बन्ध में जो भी बातें होती हैं उसको भी बिन्दु लगाकर, व्यर्थ और निगेटिव संकल्पों से अपने को पार करके सेवा करो क्योंकि अगर व्यर्थ और नगेटिव चलेगा तो सेवा नहीं कर सकेंगे। तो बाबा ने यही इशारा दिया है कि इस समय विशेष आपको मनसा सेवा करने का समय है। वाचा प्रोग्राम्स होते हैं तो उसमें वाचा सेवा तो करते ही हो लेकिन इस समय विशेष मनसा मनोबल द्वारा आत्माओं को कुछ-न-कुछ अंचली देनी है, यह विशेष अटेन्शन रखना चाहिए। और मनसा सेवा तब होगी जब हमारा मन फ्री होगा। तो बाबा का यही इशारा है कि अब अपना मनोबल बढ़ाओ और मनसा सेवा करो। ऐसे समय पर यही मनसा सेवा ही अपने और दूसरों के लिए चाहिए।

दूसरा - बाबा कहते हैं वर्तमान समय के अनुसार एकानामी का पाठ पक्का करो। जो भी हमारे खजाने हैं चाहे संकल्प हैं, बोल हैं, कर्म हैं... चाहे स्थूल चीज़ें हैं सबकी एकानामी आजकल बहुत ज़रूरी है। बिना एकानामी के एकनामी बन नहीं सकते। एकानामी अर्थात् वेस्ट को बेस्ट में चेंज करना, थोड़े में ज़्यादा फायदा लेना... इसको कहा जाता है एकानामी। इसलिए बाबा का वर्तमान समय यही इशारा है कि सब रूप से एकानामी करो। एकानामी करने से मन-बुद्धि फ्री होंगे। नहीं तो आयेगा अभी यह चाहिए, यह होना चाहिए... उससे हमारा बुद्धियोग उसी में चला जाता है। तो बाबा ने एकनामी और एकॉनामी इस पर विशेष अन्डरलाइन कराया है, इस पाठ को पक्का करो। एकानामी है तो उसका प्रूफ है एकनामी सहज बन जायेंगे। अगर एकनामी नहीं बन सकते हैं तो इसका अर्थ है ज़रूर कोई-न-कोई स्थूल या सूक्ष्म खज़ाना कहाँ न कहाँ लीकेज है। तो हर एक अपनी अवस्था में यह प्रूफ तो देख ही सकते हैं।

बाकी तो बाबा कहते आप तो हैं ही बेफिक्र बादशाह। जो भी आजकल दुनिया में हो रहा है, उसमें डरने की तो बात ही नहीं है। आपने वर्ष ही रखा है ''संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन''... तो प्रकृति आपका आर्डर मानकर चल रही है। संसार परिवर्तन तो ज़रूर कोई साधन से होगा। आप मालिकों ने संकल्प किया है संसार परिवर्तन होना चाहिए। तो आपका आर्डर प्रकृति मान रही है। तो आप क्यों सोचो कि क्या होगा, कैसे होगा। जो होगा सब अच्छा होगा क्योंकि आपने ही प्रेरणा दी है प्रकृति को। वह कर रही है। बाबा कहता है तुम बच्चों के कारण ही समय रुका हुआ है। सोचते हैं आज शुरू करें, कल शुरू करें... सब कहते हैं – सोचो, ऐसे कदम नहीं उठाओ। तो बिचारे वह भी परेशान हैं क्योंकि हम लोग तैयार नहीं हैं।

तो बाबा का यही इशारा है कि बच्चे समय को देखकर अपने मनोबल को बढ़ायें और बेफिकर बादशाह बनकर खेल देखें। खेल देखने की आदत तो है ही, ५DDD वर्ष से खेल देख रहे हैं। बाकी आने जाने के लिए पूछते हैं तो बाबा कहते बच्चे जब हालतें खराब होंगी, उस समय और तो कोई आयेगा, जायेगा नहीं। आपको टिकेट बहुत सहज मिल जायेंगी। आप सोचो नहीं कि उस समय टिकेट मिलेगी, या नहीं। बाबा के टाइम आ सकेंगे या नहीं आ सकेंगे! और तो कोई बिचारे डर के मारे आयेंगे ही नहीं, सब आपको ही मिलेगा। इसलिए आप फिकर नहीं करो, जैसे चल रहा है, चलते चलो। बाकी जहाँ-जहाँ कोई वातावरण है, वहाँ बाबा इशारा दे देता है, यह करो, यह नहीं करो। बाकी मधुबनवासी तो हैं ही बेफिक्र बादशाह, चुल पर सो दिल पर बैठे हैं। मधुबन निवासियों के लिए एक ही काम है - एकनामी, एकानामी बस। वही ध्यान रखकर करेंगे तो बहुत अच्छा है।